Date : / / No. 1

|| श्रीकृष्णाय नमः ||

शुद्धाद्वैत दर्शन का प्रायोगिक भक्ति स्वरूप

भगवान श्रीकृष्ण बालक भी है सृष्टि के पालक भी है "अणुरपि ब्रह्म व्यापकं भवति" वह ब्रह्म अणु भी है और व्यापक भी है ब्रह्मसूत्र अणुभाष्य का सिद्धान्त वेदान्त दर्शन का श्रुति प्रमाण है "अणोरणीयान् महतोमहीयान्" वह अणु परमाणु भी है. एवं महान् से महानतम भी है। जिस प्रकार हर बालक मे पालक छिपा हुआ रहता है वैसे ही हर पालक में बालक छिपा हुआ रहता है। यथा एक वयोवृद्ध पुरुष में बालभाव का प्रगतिशील धर्म निहित हुआ होने से वही छोटा बालक वयोवृद्ध के रूप मे दिखाई दे रहा है। वयोवृद्ध में बचपना बालकत्व इसलिए निहित है जब वह अपने बच्चों को खिलाता है स्वयं बालक बन जाता है उनके साथ तभी तो वह खेल पाता है। यही विरुद्ध धर्म की अवस्था हर तत्व में छिपी होने से अपना महत्व रखती है। पर

परमात्मा ने जब एक रूप से बहुरूप अनेक रूप स्वरूप होने की इच्छा करी सृष्टि करने की इच्छा की तब वह अविकृत होकर अनेक रूप मे होगया। इसे शास्त्र वेदान्त मे "अविकृत परिणामवाद" कहा गया है जैसे एक सोने का डला है उसके विविध प्रकार के आकार के कई अनत पायल, हार, अंगूठी आदि आभूषण निर्मित होते है वह सोने के अनेक आकार एवं प्रकार के आभूषण है सब स्वर्ण सोने के है परन्तु हम हार को कंगन नही कह सकते अंगूठी को कर्णफूल नही कह सकते पर स्वर्ण तो कहेंगे ही. इसी प्रकार बालक मे छुपे वृद्ध को वृद्ध नहीं कह सकते वृद्ध में छुपे बालक को बालक नही कहा जा सकता क्योंकि सामने तो वृद्ध ही दिखाई दे रहा है। यह ब्रह्मवादी सद् वादियों का सिद्धान्त है "नाऽसतो विद्यते भावो नाऽभावो विद्यते सतः" श्रीमद् भगवद् गीता। सत्ता का अस्तित्व कभी असत

नहीं हो सकता असत की कभी सत्ता होती नहीं "कथं असतः सत् जायेत" इस प्रकार सत्ता का व्यावहारिक स्वरूप हम अपने दैनंदिन स्वरूप में भी अनुभव करते हैं कि बालक में वृद्ध की सत्ता साकार नहीं दिखती इसलिए उसे बालक से बालक की तरह ही व्यवहार किया जाता है। वस्तुतः जब परमात्मा ब्रज में अवतारित होकर बालभाव से प्रकट हुआ तब उस परमात्मा रूपी बालक का लालन पालन लौकिक बालक की तरह ही किया गया "बभूव प्राकृत शिशुः" श्रीमद्भागवत इस की श्रीसुबोधिनी में महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य प्रतिपादित करते हैं कि वह प्राकृत इन्द्रियों से ग्रहण करने योग्य वह परमात्मा बाल रूप हो गया। जिन्हें ब्रजभक्तों ने प्राकृत बालक ही समझा आत्मा और परमात्मा का यह स्वरूप शुद्धाद्वैत दर्शन में भक्ति का व्यवहृत यथार्थ भाव स्वभाव बन गया है। जिस प्रकार छोटी सी चिंगारी भी वही बृहद् अग्नि का स्वरूप है एवं वह बृहद् अग्नि भी छोटी छोटी चिंगारियों का प्रचण्ड स्वरूप है।

भगवान का लीला विहारी स्वरूप में ब्रज में प्रकट होना यथार्थतः भक्तोद्धारक स्वरूप ही तो है। जगत से जगदीश की ओर ले जाने वाली यह प्रक्रिया इतनी विलक्षण है कि वरदान के फलगत स्वरूप को प्राप्त करने में वसुदेव देवकी (पृश्नि-सुतपा) के कारागृह में चतुर्भुज स्वरूप से प्रकट होकर दर्शन देना देवकी वसुदेव का अचम्भित होना, यह सब दर्शाता है कि प्रभो! आप पालक बन कर नहीं हमारे बालक के स्वरूप में पधारो। ऐसे ही धरा और द्रोण ने घनघोर तप कर ब्रह्माजी से वरदान मांगा कि हम भगवान जगदीश्वर परमात्मा का बालभाव से लालन पालन करें ऐसा वरदान दीजिए। वे ही धरा और द्रोण नन्दरायजी एवं यशोदाजी के स्वरूप में उत्पन्न हुए उन्होंने सृष्टि के पालक भगवान को बालक के स्वरूप में पाकर उनका लालन पालन पोषण किया। इसी माध्यम से उनकी निरोधात्मिका भक्ति भी सिद्ध हो गई

Mayuri

तथा साथ में गोप गोपांगनाओं की सख्य भाव एवं कान्त भाव की निरोधात्मिका भक्ति भी सहज सिद्ध होगई।

भगवान यदि मनुष्य रूप धारण नहीं करते तो ममता कैसे होती तथा समता समभाव कैसे होता? ममता जैसे श्रीनन्दरायजी एवं श्रीयशोदाजी को हुई। समता अर्थात समभाव जो सख्यभाव में आवश्यक है जब यह समभाव होता है तभी मित्रता सख्यभाव सम्पन्न होता है जैसे गोप बालकों को सिद्ध हुआ। नीतिशास्त्र कहता है "समानशील व्यसनेषु सख्यम" गोपीजनों को गोपबालकों को परमात्मा का सहज सख्य भाव एवं कान्तभाव का अनुभव हुआ वे अपने स्वरूप को भूल कर प्रभु के स्वरूप एवं भक्ति में स्वरूपासक्त होगए "शैयासनासनालाप क्रीडास्नानाशनादिषु, न विदुः सन्तमात्मानं वृष्णयः कृष्ण चेतसः" श्रीमद्भागवत इसलिए भगवान ने ऐसा रूप धारण किया जिसे देखकर समभाव समता एवं ममता हृदय में जागृत होसके। मनुष्य भक्त भाव से भगवान में सहज प्रीति कर पाए इसका सरल सहज उदाहरण मिलता है बालभाव। छोटे बालक के प्रति वात्सल्य सहज उमड़ पड़ता है उसकी ओर बिना किसी तर्क वितर्क या खटपट के हृदय ही नहीं मन मस्तिष्क भी आकर्षित होजाता है।

ऋषि मुनि ज्ञानी तपस्वी निराकार की उपासना करते करते थक जाते हैं फिर भी परमात्मा का साक्षात्कार नहीं होपाता क्योंकि वह निराकार है उनके लिए तो जबकि पुष्टिभक्तिमार्ग में भक्त के लिए भगवान साकार स्वरूप को धारण करके भक्त के भाव के अनुरूप स्वरूप धारण करते हैं "ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्" श्रीमद्भगवद् गीता "जाकी रही भावना जैसी तिन देखी प्रभु मूरत तैसी" श्रीरामचरितमानस।

भगवान ने बाल स्वरूप इसलिए धारण किया जिससे उनको लाड़ लड़ाने के लिए मातृ भाव उमड़ पड़े

शु.द.प्रा.म

Date : / / No. 4

ममता प्रभुमयी हो जाए

वात्सल्य भाव जाग्रत हो उठे। हम इसका जीता जागता उदाहरण श्रीमद्भागवत् में श्रीकृष्ण जन्म प्रकरण की बाल लीला से लेते हैं तथा पुष्टिमार्ग में पुष्टि पुरुषोत्तम प्रभु भगवान की सेवा में हम स्वयं अनुभव करते हैं। जिस प्रकार छोटे बालक को माखन मिश्री, मोदक, पेड़ा, बूरा रोटी मेवा मिश्री देते हैं तो वह प्रसन्न हो जाता है इसके साथ पुष्टिमार्ग में भगवान श्रीकृष्ण को बाल भोग समर्पित किया जाता है। उन्हें गौदुग्ध के सद्य: फेन आग सहित धैया अरोगाई जाती है। गोरस प्रभु को प्रिय है गोमाता भगवान को प्रिय होने से वे गो चारण करते हैं। "आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय गोविन्द को गायन में बसवो ही भावे" अष्टछाप महाकवि. गोविन्दस्वामी कृत पद।

अत: वेद वेदान्त में परंब्रह्म कहा गया है स्मृति में परमात्मा, पुराणों में भगवान शब्द से अभिहित किया गया है। वह अनेक रूप धारण करने पर भी एक है वह श्रीकृष्ण विविध रूप एवं नाम लीलानुरूप धारण करते हुए अद्भुत कर्मा ऐसे लीला विहारी श्रीकृष्ण को जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्य महाप्रभु प्रणाम करते हैं ॥

नमो भगवते तस्मै कृष्णायाद्भुत कर्मणे।
रूप नाम विभेदेन जगत्क्रीड़ति यो यत:॥ शास्त्रार्थ प्रकरण

निष्कर्षत: वही परंब्रह्म शुद्धाद्वैत वेदान्तानुसार दर्शन का प्रायोगिक स्वरूप धारण करते हुए अपनी अवतार लीला में सरल सहज स्वरूप धारण करता है जिससे पुष्टि भक्ति सरल जीवन शैली में ओतप्रोत हो जाती है भक्त जीवन में शुद्धाद्वैत वेदान्त का प्रायोगिक स्वरूप साकार हो उठता है।

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यचरण का शुद्धाद्वैत पुष्टिमार्गीय भक्ति का सहज व्यावहारिक स्वरूप है जो कि एक अदेय योगदान है।